

कला स्नातक (सामान्य) इतिहास

दिसंबर 2024

बी एच आई सी 132 भारत का इतिहास

लगभग 300 सी ई 1206 तक

MOST IMPORTANT QUESTIONS FOR EXAM

SAME VIDEO IN ENGLISH IS AVAILABLE

HINDI PART-2

बादामी के चालुक्य पर एक निबंध लिखिए ।

बादामी के चालुक्य दक्षिण भारत के एक महत्वपूर्ण वंश थे, जिन्होंने 6वीं से 8वीं सदी तक शासन किया। इस वंश का मुख्यालय बादामी (जो आज के कर्नाटका राज्य में स्थित है) था। चालुक्य वंश ने भारतीय कला, स्थापत्य और संस्कृति में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

संस्थापन और प्रारंभिक इतिहास

चालुक्य वंश की नींव **पुलकेशिन I** ने रखी, जिन्होंने लगभग 543 ई. में बादामी को अपनी राजधानी बनाकर शासन शुरू किया। उन्होंने स्थानीय शासकों को हराकर अपना साम्राज्य फैलाया।

पुलकेशिन II

चालुक्य वंश का सबसे प्रसिद्ध और शक्तिशाली शासक **पुलकेशिन II** था, जिसने 610 से 642 ई. तक शासन किया। उनके नेतृत्व में चालुक्य साम्राज्य अपने चरम पर पहुंचा। उन्होंने उत्तर भारत के प्रसिद्ध सम्राट **हर्षवर्धन** को हराया और **गुप्त साम्राज्य** के सम्राट **विक्रमादित्य** को भी पराजित किया। उनकी सबसे बड़ी सैन्य सफलता **पुलकेशिन II** द्वारा दक्षिण भारत में स्थिरता बनाए रखना और अन्य शक्तियों को हराना था।

कला और वास्तुकला

चालुक्य वंश को भारतीय कला और स्थापत्य में उनके योगदान के लिए जाना जाता है, खासकर **हिंदू मंदिरों** की वास्तुकला में। उनकी वास्तुकला ने उत्तर और दक्षिण भारत के शैलियों का मिश्रण किया। उनके स्थापत्य के कुछ प्रमुख उदाहरण हैं:

1. **बादामी गुफा मंदिर:** यह गुफा मंदिर बादामी में स्थित है और भारतीय रॉक-कट वास्तुकला के प्रारंभिक उदाहरण हैं। इन मंदिरों में हिंदू देवताओं जैसे विष्णु, शिव और जैन तीर्थकरों की मूर्तियाँ और उकेरनियाँ हैं।
2. **पट्टदकल मंदिर:** पट्टदकल में 7वीं और 8वीं सदी के मंदिरों का समूह है, जो यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल है। इन मंदिरों में उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीय स्थापत्य शैलियों का मिश्रण दिखाई देता है।
3. **ऐहोल:** ऐहोल, जिसे भारतीय वास्तुकला का "कुंडली" कहा जाता है, यहां भी चालुक्य वंश द्वारा बनाए गए कई मंदिर स्थित हैं। यह स्थान स्थापत्य कला में चालुक्य वंश के योगदान का प्रमुख उदाहरण है।

धर्म और संस्कृति

चालुक्य वंश के शासक हिंदू धर्म और जैन धर्म दोनों के संरक्षक थे। वे विभिन्न देवताओं को समर्पित मंदिरों का निर्माण करते थे, साथ ही जैन धर्म को भी बढ़ावा देते थे। उनकी शाही दरबार में संस्कृत और कन्नड़ भाषा का प्रयोग होता था, और इस समय साहित्य और विद्या को भी बढ़ावा मिला।

चालुक्य वंश का पतन

पुलकेशिन II के बाद, चालुक्य वंश को आंतरिक संघर्षों और बाहरी आक्रमणों का सामना करना पड़ा। **राष्ट्रकूट वंश**, जो उत्तर भारत में उभरा था, ने चालुक्यों को हराकर उनकी राजधानी बादामी पर कब्जा कर लिया। इससे बादामी के चालुक्य वंश का अंत हो गया, लेकिन उनके वंशजों ने **कल्याणी के चालुक्य** और **वेंगी के चालुक्य** के रूप में दक्षिण भारत में अपनी सत्ता कायम रखी।

विरासत

चालुक्य वंश का भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। उनके द्वारा निर्मित मंदिर, मूर्तियाँ और साहित्य आज भी भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा हैं। उनकी वास्तुकला और कला ने अन्य दक्षिण भारतीय वंशों, जैसे राष्ट्रकूट और होयसलों, पर गहरा प्रभाव डाला। उनके द्वारा बनाए गए कई मंदिर और काव्य रचनाएँ आज भी भारत में इतिहास और संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

सारांश में, चालुक्य वंश ने दक्षिण भारत के इतिहास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उनके स्थापत्य, कला और संस्कृति के योगदान ने भारतीय सभ्यता में एक अमिट छाप छोड़ी।

टिप्पणी लिखिए : राष्ट्रकूट वंश:

राष्ट्रकूट एक शक्तिशाली वंश था जिसने 6वीं से 10वीं सदी तक भारत के बड़े हिस्सों पर शासन किया। इस वंश का मुख्यालय डेक्कन क्षेत्र में था, और उनके साम्राज्य में आज के महाराष्ट्र, कर्नाटका, आंध्र प्रदेश और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्से शामिल थे। राष्ट्रकूट वंश अपने सैन्य बल, सांस्कृतिक उपलब्धियों और कला व वास्तुकला में महत्वपूर्ण योगदान के लिए जाना जाता है।

उत्पत्ति और उत्थान

राष्ट्रकूट वंश की उत्पत्ति थोड़ी अस्पष्ट है, लेकिन 8वीं सदी में यह वंश प्रमुख हुआ। **दंतिदुर्ग** ने, जो पहले प्रमुख राष्ट्रकूट शासक थे, चालुक्य वंश को हराकर 753 ई. में डेक्कन क्षेत्र में अपना साम्राज्य स्थापित किया। हालांकि, वंश ने अपने चरम को **अमोगवर्षा I** (814 से 878 ई. तक शासन) के समय प्राप्त किया, जो न केवल एक कुशल शासक थे, बल्कि साहित्य और संस्कृति के संरक्षक भी थे।

उपलब्धियाँ और योगदान

- वास्तुकला:** राष्ट्रकूट वंश अपनी वास्तुकला के अद्भुत उदाहरणों के लिए प्रसिद्ध है, विशेष रूप से **एलोरा गुफाएँ**। एलोरा में स्थित **कैलासा मंदिर**, जो एक ही चट्टान से काटकर बनाया गया है, भारतीय रॉक-कट वास्तुकला का एक अद्वितीय उदाहरण है। वंश ने कई अन्य मंदिर और स्मारक भी बनाए, जिनमें प्रसिद्ध **राष्ट्रकूट शिलालेख** शामिल हैं।
- सैन्य शक्ति:** राष्ट्रकूट वंश अपनी सैन्य शक्ति के लिए भी जाना जाता है। **ध्रुव** और **कृष्ण I** जैसे शासकों के तहत, साम्राज्य ने उत्तरी भारत के प्रमुख वंशों जैसे **प्रतिहारों** और **पालों** को हराकर अपने क्षेत्र का विस्तार किया।
- साहित्य और संस्कृति:** राष्ट्रकूट वंश ने कला, साहित्य और शिक्षा को बढ़ावा दिया। **अमोगवर्षा I** के दरबार में संस्कृत साहित्य और ज्ञान का महत्वपूर्ण केंद्र था। उनके शासन के दौरान प्रसिद्ध कन्नड़ ग्रंथ "**कविराजमार्ग**" लिखा गया, जो कन्नड़ भाषा और कविता पर एक महत्वपूर्ण Treatise है।
- धर्म:** राष्ट्रकूट शासक धार्मिक रूप से सहिष्णु थे। हालांकि वे **शैववाद** (शिव पूजा) के अनुयायी थे, उन्होंने **विष्णुवाद** और **जैन धर्म** का भी समर्थन किया। उन्होंने इन देवताओं के लिए कई मंदिर बनाए।

पतन

अपने उत्कर्ष के बाद, राष्ट्रकूट वंश 10वीं सदी में गिरने लगा। इसका कारण आंतरिक संघर्ष, दक्षिण से **चोलों** के आक्रमण और **कल्याणी के चालुक्यों** का बढ़ता हुआ प्रभाव था। अंततः यह वंश कमजोर हो गया और अपने साम्राज्य पर नियंत्रण खो दिया।

विरासत

राष्ट्रकूट वंश ने भारतीय इतिहास में एक स्थायी विरासत छोड़ी। उनके वास्तुकला, साहित्य और संस्कृति में योगदान आज भी सराहे जाते हैं। **एलोरा गुफाएँ** आज भी यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल हैं और उनके वास्तुकला के कौशल का प्रतीक बनी हुई हैं। उनके साहित्यिक समर्थन ने संस्कृत और कन्नड़ जैसी क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में योगदान किया।

टिप्पणी लिखिए : संस्कृत साहित्य के विकास में कालिदास का योगदान

कालिदास का संस्कृत साहित्य के विकास में योगदान

कालिदास, संस्कृत के सबसे महान काव्यकारों में से एक, ने संस्कृत साहित्य के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया। उनके काव्य, नाटक और महाकाव्य साहित्य के क्षेत्र में योगदान ने संस्कृत साहित्य को नई दिशा दी और उसे शिखर पर पहुँचाया। कालिदास की रचनाएँ भावनात्मक गहराई, भाषा के उत्कृष्ट प्रयोग और अलंकारिक शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। उनका योगदान आज भी भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण है।

यहाँ कालिदास के योगदान के कुछ मुख्य पहलुओं पर चर्चा की गई है:

1. भाषा और शैली में प्रवीणता

कालिदास को संस्कृत भाषा पर अद्वितीय अधिकार प्राप्त था। उनकी रचनाएँ सटीक व्याकरण, समृद्ध शब्दावली और लयबद्ध शैली से भरपूर होती थीं। उनके द्वारा प्रयोग किए गए रूपकों, अलंकारों और काव्यशास्त्र के तत्वों ने संस्कृत साहित्य में एक नई मानक की स्थापना की। उनके काव्य में चित्रात्मकता और भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता ने बाद के कवियों और लेखकों को प्रभावित किया।

2. क्लासिकल संस्कृत नाटक

कालिदास के नाटक संस्कृत नाटक के सर्वोत्तम उदाहरण माने जाते हैं। उनके प्रसिद्ध नाटक "शाकुन्तलम" और "विक्रमोर्वशी" अपनी भावनात्मक गहराई, सुंदर भाषा और मजबूत पात्रों के लिए जाने जाते हैं। इन नाटकों ने नाटक लेखन के नए रूप प्रस्तुत किए और साहित्य में भावनाओं और रिश्तों को अधिक महत्व दिया।

- "शाकुन्तलम" (अभिज्ञानशाकुन्तलम) एक सुंदर प्रेम कथा है जिसमें राजा दुष्यंत और शाकुन्तला के प्रेम को दर्शाया गया है। यह नाटक प्रेम, प्रकृति और समय और स्थान के पार जाने वाली भावनाओं का अद्भुत चित्रण करता है। यह भारतीय साहित्य का एक अत्यंत प्रसिद्ध काव्य है।
- "विक्रमोर्वशी" एक और कालिदास का नाटक है, जिसमें रोमांस और पुरानी कथाएँ जुड़ी हुई हैं। यह राजा विक्रम और अप्सरा उर्वशी के दिव्य प्रेम की कहानी है।

3. महाकाव्य काव्य

कालिदास को "रघुवंश" और "कुमारसंभव" जैसे महाकाव्य लिखने का श्रेय भी जाता है, जो संस्कृत साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं।

- **"रघुवंश"** (रघु वंश) एक महाकाव्य है, जो रघु वंश की कहानी को बताता है, जो इसकी नींव से लेकर राजा राम तक की यात्रा पर आधारित है। यह रचना अपनी सुंदर भाषा और जटिल कथा शैली के लिए प्रसिद्ध है।
- **"कुमारसंभव"** (कुमार का जन्म) एक महाकाव्य है, जो भगवान कार्तिकेय के जन्म और उनकी शक्ति के विकास की कहानी है। यह रचना अपने धार्मिक और दैवीय कथानकों के साथ गहरे दार्शनिक विचार प्रस्तुत करती है।

4. प्रकृति और सौंदर्य का चित्रण

कालिदास ने प्रकृति और सौंदर्य का गहरा सम्मान किया था, और इसे अपनी रचनाओं में सुंदरता से व्यक्त किया। उनके द्वारा प्राकृतिक दृश्यों, ऋतुओं और आसपास की दुनिया की सुंदरता का जो चित्रण किया गया है, वह संस्कृत साहित्य में अद्वितीय माना जाता है। उनका सबसे प्रसिद्ध काव्य, **"मेघदूत"** (वद्र्धक बादल) है, जिसमें एक बादल को संदेशवाहक के रूप में भेजा जाता है। इस काव्य में प्रकृति का उपयोग भावनाओं जैसे विरह और तृष्णा को व्यक्त करने के लिए किया गया है।

JOIN WHATSAPP CHANNEL FOR LIVE CLASS NOTIFICATION

PDF IS ON WEBSITE hindustanknowledge.com

Watch complete playlist

ScholarVaidya